

श्री बजरंग बाण
दोहा

नश्चय प्रेम प्रतीति, वनिय करै सनमान तेहि के कारज सकल शुभ, सदिध करै हनुमान ॥

जय हनुमन्त सन्त हतिकारी,
सुन लीजै प्रभु अरज हमारी जन के काज वलिम्ब न कीजै,
आतुर दौरमिहा सुख दीजै । जैसे कूदा सिन्धु महपिरा,
सुरसा बदन पैठ विसितारा आगे जाय लंकनी रोका,
मारेहु लात गई सुरलोका जाय वभीषन को सुख दीन्हा, सीता नरिखि पिरमपद लीन्हा बाग उजारा सिन्धु महं बोरा,
अति आतुर जमकातर तोरा अक्षय कुमार को मारि सिंहारा,
लूम लपेट लंक को जारा लाह समान लंक जरि गई, जय जय धुना सुरपुर में भई अब वलिम्ब केहिकारन स्वामी,
कृपा करहु उर अन्तर्यामी जय जय लखन प्राण के दाता,
आतुर होय दुःख करहु नपिता जै गरिधिर जै जै सुख सागर,
सुर समूह समरथ भटनागर ॐ हनु हनु हनु हनुमन्त हठीले,
बैरहि मारू बजर की कीले गदा बजर लै बैरहि मारो,
महाराज प्रभु दास उबारो ॐ कार हुंकार महाप्रभु धावो, बजर गदा हनु वलिम्ब न लावो ॐ हरि हरि हरि हनुमन्त कपीसा,
ॐ हुं हुं हुं हनु अरि उर शीशा सत्य होहु हरि शपथ पायके,
राम दूत धरु मारु जाय के जय जय जय हनुमन्त अगाधा,
दुःख पावत जन केहि अपराधा पूजा जप तप नेम अचारा,
नहि जानत हौं दास तुम्हारा वन उपवन मग गरि गृह माहीं,
तुम्हरे बल हम डरपत नाही पांय परौ कर जोर मिनावौ,
येहि अवसर अब केहि गोहरावौ जय अंजना कुमार बलवन्ता,
शंकर सुवन वीर हनुमन्ता बदन कराल काल कुल घालक,
राम सहाय सदा प्रतपिलक भूत, प्रेत, पशाच नशाचर,
अग्नि बैताल काल मारी मर इन्हें मारु,
तोहि शपथ राम की, राखउ नाथ मरजाद नाम की जनकसुता हरदास कहावो,
ताकी शपथ वलिम्ब न लावो जै जै जै धुनि होत अकासा,
सुमरित होत दुसह दुःख नाशा चरन शरण कर जोर मिनावौ,
यहि अवसर अब केहि गोहरावौ उठु उठु चलु तोहराम दुहाई, पांय परौ कर जोर मिनाई ॐ चं चं चं चं चपल चलंता,
ॐ हनु हनु हनु हनु हनुमन्ता ॐ हं हं हांक देत कपि चंचल,
ॐ सं सं सहम पिराने खल दल अपने जन को तुरत उबारो,
सुमरित होय आनंद हमारो यह बजरंग बाण जेहि मारे,
ताहि किहो फरि कौन उबारै पाठ करै बजरंग बाण की,
हनुमत रक्षा करै प्राण की यह बजरंग बाण जो जापै,
ताते भूत-प्रेत सब कांपै धूप देय अरु जपै हमेशा,
ताके तन नहि रहै कलेशा ॥

दोहा

प्रेम प्रतीति किपि भजै, सदा धरै उर ध्यान । तेहि के कारज सकल शुभ, सदिध करै हनुमान ॥